समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२६ ● वर्ष : ३० ● अंक : २ (निरंतर अंक : ३५०) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

जो श्रीकृष्ण में चमचम चमकता है, भगवान शिव में समाधि-सुख देता है, जगदम्बा में उभरता है, वही भगवान वेदव्यासजी, श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी के रूप में, भगवत्पाद लीलाशाहजी बापू के रूप में ज्ञान देता है और आशाराम में छुपा हुआ जागृत होता है । इस घटना का नाम है आत्मसाक्षात्कार । - पूज्य बापूजी

संत श्री आशारामजी बापू का ६२वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : १२ अक्टूबर

समझेंगे शरीर का गुण और सत्त्व तो प्रकटेगा परमात्मतत्त्व

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

यह शरीर हड्डी, मांस और रुधिर का पिंड है। कुछ खड़ी हड्डियाँ हैं, कुछ आड़ी हड्डियाँ हैं और बीच में आँतों का जाल है। यह मांस और रुधिर से भरा है। इसके ऊपर चमड़े का आवरण है। इसमें वात, पित्त और कफ सदा बनते और बिगड़ते रहते हैं। इसके नौ द्वारों से गंदगी ही निकलती है। कितना भी बढ़िया खाओ अगर हजम हो गया तो मल-मूत्र बनता है और नहीं हजम हुआ तो जहर बन जाता है। यह तन विष की बेल री... यह शरीर विष बनानेवाला थैला है। 'पृथ्वी का अमृत' कहा जानेवाला बढ़िया-से-बढ़िया गाय का दूध मिश्री डाल के पिया लेकिन कुछ घंटों के बाद में देखो क्या उसकी गंदगी बन जाती है (पेशाब बन जाता है)। दिवाली के दिनों में बढ़िया-से-बढ़िया मिठाइयाँ खायीं। दिवाली के २ दिन पहले मिठाइयों की दुकान पर मिठाइयों को अगरबत्ती होती थी और दिवाली के २ दिन बाद मिठाइयाँ (उनका रूपांतर - विष्ठा) जहाँ पड़ी हैं वहाँ से गुजरो तो नाक दबोच के गुजरना पड़ता है। मिठाई का क्या कसूर, केवल शरीर से पसार हुई और गंदी विष्ठा बन गयी। यह शरीर ऐसा ही है फिर भी इस शरीर में अगर कोई सत्त्व है तो वह परमात्मा का है। उस परमात्मा का प्रसाद चखानेवाले संत और सत्संग मिल जायें तो आपकी चरणरज भी दूसरे का भाग्य बना देगी। ऐसी ऊँचाई भी है !

श्रीमद्भागवत माहात्म्य के अध्याय ४, श्लोक ७९ में गोकर्ण अपने पिता आत्मदेव को वैराग्य का उपदेश देते हुए कहते हैं :

देहेऽस्थिमांसरुधिरेऽभिमतिं त्यज त्वं जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च ।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभङ्गनिष्ठं वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः ॥

'हे पिताजी ! यह शरीर हड्डी, मांस और रुधिर का पिंड है। इसे आप मैं और मेरा मानना छोड़ दें और स्त्री-पुत्र आदि को अपना कभी मत मानें। इस संसार को रात-दिन क्षणभंगुर देखें। इसकी किसी भी वस्तु को स्थायी समझकर उसमें राग न करें। बस, एकमात्र वैराग्य रस के रसिक होकर भगवान की भक्ति में लगे रहें।'

इस संसाररूपी मुसाफिरखाने में कोई किसीका नहीं है। सब अपने-अपने श्वास खर्च करके चले जाते हैं। इसमें ममता रखना ही दुःख का कारण है।

रज्जब रोवे कौन को, हँसे सो कौन विचार। गये सो आवन के नहीं, रहे सो जावनहार ॥

व्यवहार में रोना-धोना पड़े तो जरा कर लो लेकिन अंदर से समझो कि 'अपना शरीर भी मरनेवाला है।' मरनेवालों के पीछे कब तक रोओगे ? अमर आत्मा को पाने के लिए दो आँसू बहाकर मरनेवाले शरीर में अमर आत्मा की मुलाकात हो जाय ऐसे सत्संग और सद्गुरु को खोज लो तो बेड़ा पार हो जायेगा !

यही है आत्मसाक्षात्कार का रहस्य

पूज्य बापूजी का ६२वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : १२ अक्टूबर

जिसको आप छोड़ नहीं सकते उसीको आप 'मैं'रूप में जान लो । इसीका नाम है आत्मसाक्षात्कार । बस, सारे शास्त्रों, प्राणायामों, भजन, ध्यान एवं सारे मत-मजहब-पंथों का आखिरी व ऊँचा फल यही है कि जो मिट नहीं सकता उसको आप 'मैं' जान लीजिये और जो सदा रह नहीं सकता उसको आप प्रकृति का जान लीजिये ।

१२ अक्टूबर को पूज्य बापूजी का ६२वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस है । आप सभीको खूब-खूब बधाई ! आत्मसाक्षात्कार के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

जिसको आप छोड़ नहीं सकते उसीको आप 'मैं'रूप में जान लो । इसीका नाम है आत्मसाक्षात्कार । बस, सारे शास्त्रों, प्राणायामों, भजन, ध्यान एवं सारे मत-मजहब-पंथों का आखिरी व ऊँचा फल यही है कि जो मिट नहीं सकता उसको आप 'मैं' जान लीजिये और जो सदा रह नहीं सकता उसको आप प्रकृति का जान लीजिये ।

परमात्मा शाश्वत है । उसको पाने के लिए नश्वर साधन पर्याप्त हैं क्या ? जो भी करोगे वह नश्वर ही होगा । आपका शरीर नश्वर, आपकी चीज-वस्तुएँ नश्वर, आपका पूजा-पाठ नश्वर... नश्वर से आप शाश्वत को खरीद सकते हैं क्या ? नश्वर तो नश्वर ही होता है ।

यदि नश्वर से शाश्वत की रक्षा होती हो तो ऐसे शाश्वत को शाश्वत कहनेवाला पागल है । नश्वर शरीर और नश्वर संबंधों से परमात्मा की रक्षा करें - यह तो हो ही नहीं सकता ।

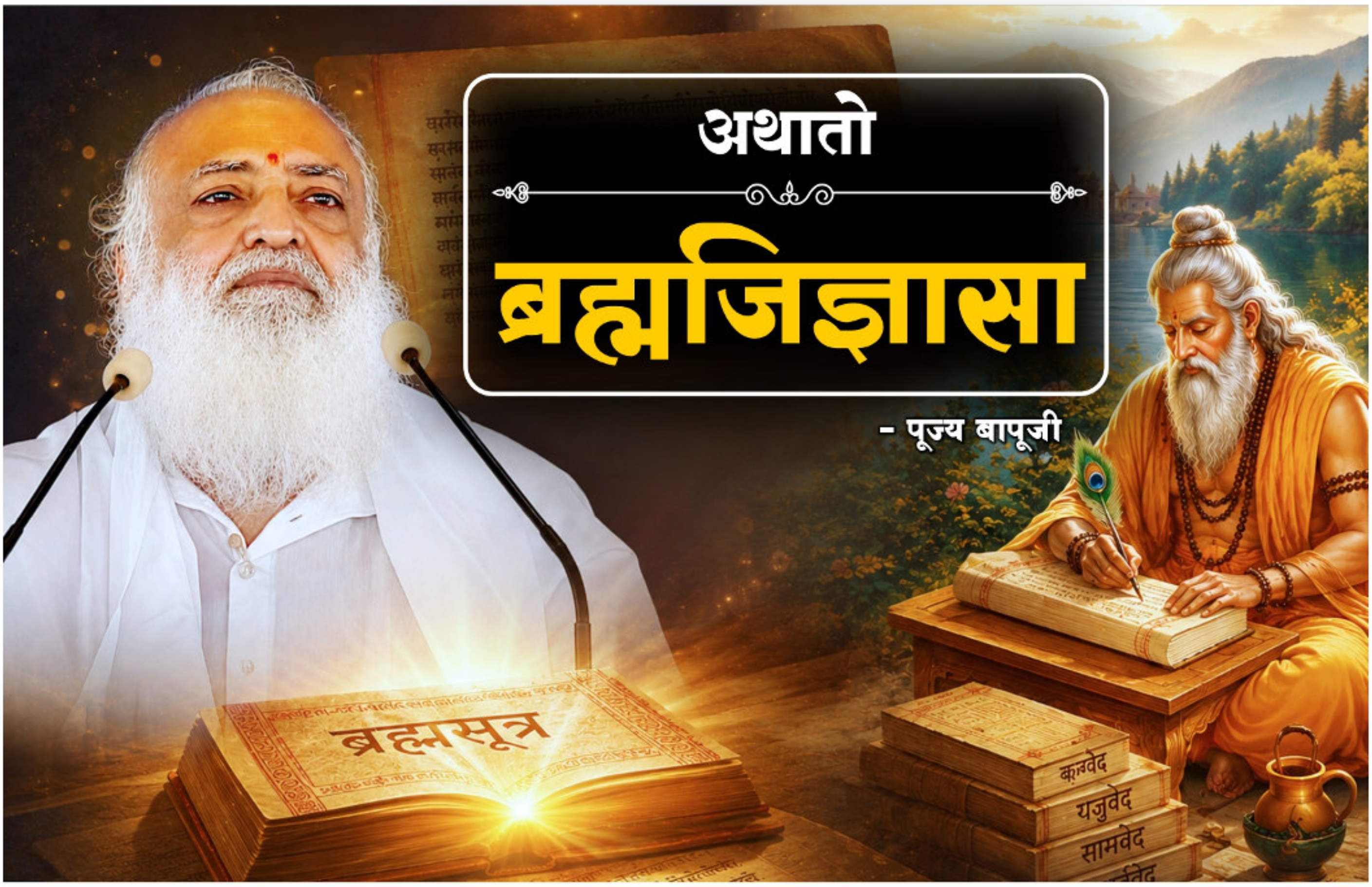

श्रद्धा की जगह पर अश्रद्धा तथा प्रयत्न की जगह पर प्रमाद न आने पाये; सतर्कता, स्फूर्ति की जगह पर आलस्य न घुस जाय, कर्तव्य-सम्मुखता की जगह पर कर्तव्य-विमुखता न आ जाय इस बात का विवेक करना चाहिए। यह विवेक होगा तो पिया से (परमात्मा से) मिलने में देर नहीं।

भगवान वेदव्यासजी ने ब्रह्मसूत्र (अध्याय १, पाद १, सूत्र १) में लिखा है : **अथातो ब्रह्मजिज्ञासा**। तुझे कुछ जानना है तो उस एक को जान जिससे सारा जाना जाता है। तुझे कुछ पाना है तो उस एक को पा जिससे सब पाया जाता है। तुझे मिलना है तो उस एक से मिल जिससे तू सबसे एक ही साथ मिल पाये। तो जीवन की दैनंदिनी (डायरी) में लिखो : **अथातो ब्रह्मजिज्ञासा**। विवेक के विकास में ब्रह्मजिज्ञासा एवं जीवन का सर्वांगीण विकास समाया है और विवेक के नाश में इनका नाश होता है।

श्रद्धा की जगह पर अश्रद्धा तथा प्रयत्न की जगह पर प्रमाद न आने पाये; सतर्कता, स्फूर्ति की जगह पर आलस्य न घुस जाय, कर्तव्य-सम्मुखता की जगह पर कर्तव्य-विमुखता न आ जाय इस बात का विवेक करना चाहिए। यह विवेक होगा तो पिया से (परमात्मा से) मिलने में देर नहीं। मिलने में देर लगने का कारण है कि हम योग्य बनने में देर कर रहे हैं। गरीबी से, बीमारी से, अपमान से, दुःखों से, पराधीनता से मनुष्यमात्र मुक्ति चाहता है। मुक्ति तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसको पाने के लिए तुम्हारी स्वाभाविक चेष्टा है। छोटा-सा जीव-जंतु भी बंधन नहीं चाहता तो मनुष्य बंधन कैसे चाहेगा ? मोक्ष तुम्हारा स्वभाव है और उसे पाना तुम्हारा हक है। गलती यह होती है कि हम विवेक का आश्रय नहीं लेते। श्रद्धा की जगह पर अश्रद्धा, तत्परता की जगह पर प्रमाद... और प्रमाद क्यों होता है ? परिस्थिति, साधन-

मन की शांति हेतु सहायक है ध्यान और ॐकार-जप

❖ सुप्रसिद्ध बुद्धिजीवियों ने व्यक्त किया अपना अनुभव ❖

मंत्रजप, ध्यान मात्र आस्था का विषय नहीं बल्कि मन को शांति प्रदान करनेवाली वैज्ञानिक साधनाएँ हैं। इस बात को आज अनेक वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी भी स्वीकार कर रहे हैं।

'मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान' के निदेशक डॉ. काशीनाथ समागंडी ने कुछ समय पूर्व कहा : ''आधुनिक जीवनशैली और डिजिटल जगत से निरंतर जुड़ाव मानसिक दबाव पैदा कर रहे हैं, जिससे ध्यान उसके लिए आवश्यक सुरक्षात्मक और उपचारात्मक साधन बन गया है।''

'राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान' के शीर्ष वैज्ञानिक डॉ. हेमंत भार्गव कहते हैं : ''एम.बी.बी.एस. के बाद मुझे एहसास हुआ कि आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान की अपनी एक सीमा है और भारत के प्राचीन विज्ञान में मानवता को चिकित्सा के क्षेत्र में देने के लिए बहुत सम्भावनाएँ मौजूद हैं। इसलिए मैंने योग में एम.डी. और पीएच.डी. की। मेरा काम तनाव, अवसाद (depression) आदि से पीड़ित मरीजों का योग थेरेपी से उपचार करना है। हमने एक अध्ययन किया जिसमें पाया कि जब मरीज 'ॐ' का जप करते हैं तो उनके मस्तिष्क के मूलभूत भाग अमिग्डला में निष्क्रियता आने लगती है। अमिग्डला मस्तिष्क का वह हिस्सा है जो भय, आक्रामकता जैसी नकारात्मक भावनाओं अर्थात् मनुष्य में उत्पन्न होनेवालीं पाशविक प्रवृत्तियों से जुड़ा है। उसकी क्रियाशीलता कम होने का मतलब है कि उस क्षेत्र में रक्त-प्रवाह कम होता है, जो यह दर्शाता है कि 'ॐ' के जप के बाद वह क्षेत्र अधिक शांत हो जाता है।''

अध्यात्म के लाभों को जानकर आज ध्यान एवं

छोटी-छोटी बात में लोग कर रहे हैं पूरे जीवन का अंत !

हे मानव ! आत्महत्या का महापाप करके अपना शत्रु मत बन। दुर्लभ मनुष्य-जीवन में सत्संग की शरण लेकर अपने-आपका मित्र बन और निष्काम सेवा, भगवद्भक्ति एवं आत्मविचार द्वारा परम गति (आत्मपद) को पा ले। एक ओर अधोगति, दूसरी ओर परम उद्धार - चुनाव तेरा है।

मुजफ्फरनगर में एक ३२ वर्षीय पुरुष का पत्नी से ईद के तोहफे पर झगड़ा हुआ - उसने पत्नी और २ मासूम बच्चों को जहर दे दिया, फिर खुद भी फाँसी लगा ली। शराब के नशे में डूबी हैदराबाद की ४५ वर्षीया महिला ने पति से शराब की बोतल माँगी - उसने मना किया, महिला ने खुद को कमरे में बंद किया और फाँसी पर लटक गयी।

ऐसी बहुत सारी घटनाएँ सामने आ रही हैं। ये

हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि क्यों एक व्यक्ति जरा-सा मन के विपरीत होने पर अपने पूरे जीवन को समाप्त कर देता है ? क्या इन आत्महत्याओं की मूल वजह बाहरी परिस्थिति है या व्यक्ति की भीतरी स्थिति ? वास्तव में आत्मघाती कृत्यों में बाह्य घटना निमित्तमात्र है, वास्तविक कारण प्रतिकूलता को सहने की आंतरिक शक्ति का अभाव है। इसके मूल में भीतरी समझ का अभाव है। जब व्यक्ति धर्म, शास्त्र-ज्ञान से विमुख होकर मनमाना आचरण करता है तो वह आंतरिक रस व भगवद्-आश्रय से विहीन हो जाता है और उचित-अनुचित का विवेक नहीं कर पाता। ऊपर से इंटरनेट, स्मार्ट फोन, सोशल मीडिया की चकाचौंध सांसारिक परिस्थितियों, भोगों से सुखी होने की कामना को

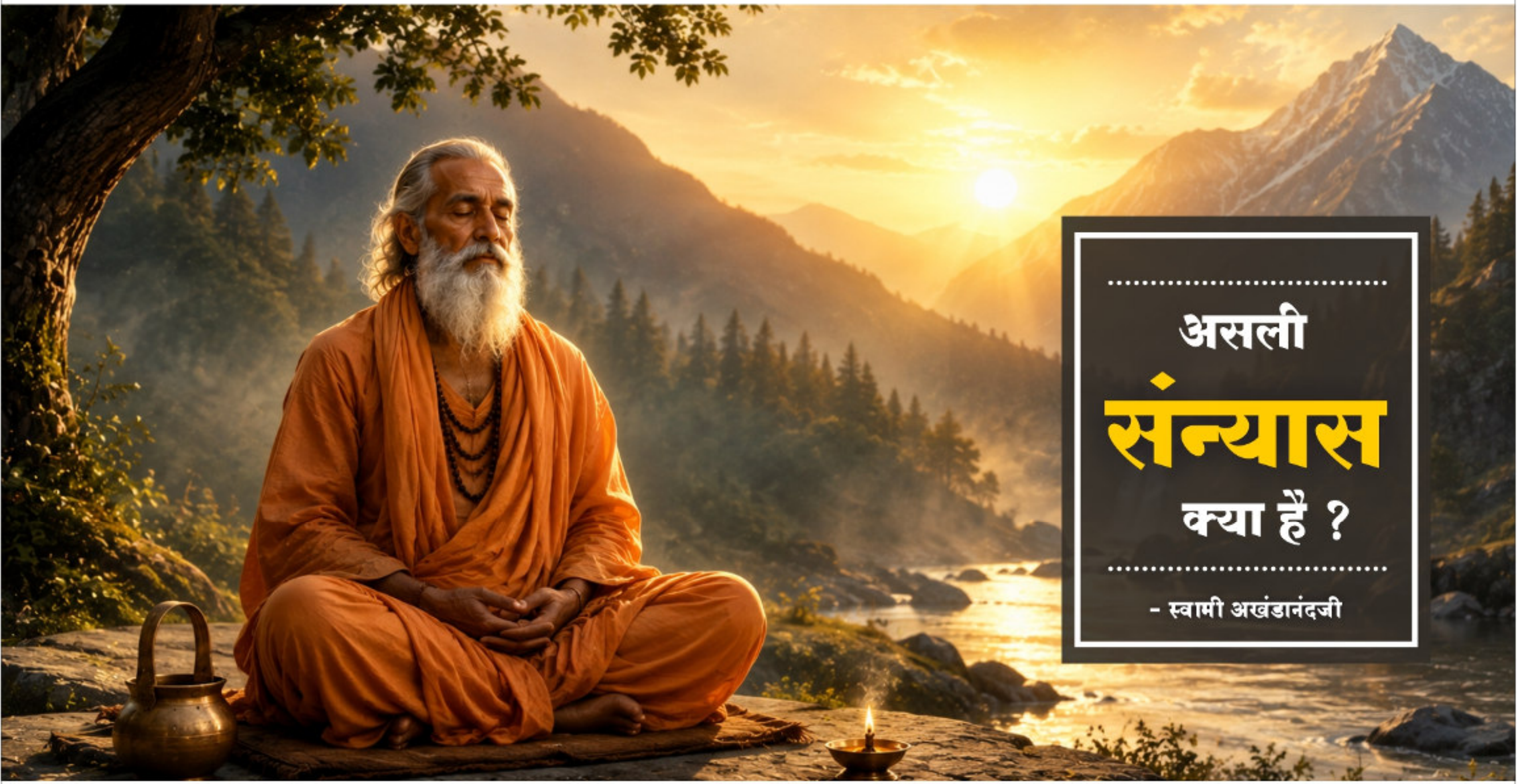

असली संन्यास क्या है ?

- स्वामी अखंडानंदजी

संन्यास का अर्थ यह है कि आप अपने को दुःखी और सुखी मत मानिये। आप अपने को कर्ता और ज्ञाता मत मानिये। आप तो ज्ञानस्वरूप हैं। आप मन की उपाधि से अपने को भोक्ता क्यों मानते हैं ? आप कर्मेन्द्रिय की उपाधि से अपने को कर्ता क्यों मानते हैं ? आप ज्ञानेन्द्रिय की उपाधि से अपने को ज्ञाता क्यों मानते हैं ? आप अपने को भोक्ता, कर्ता, ज्ञाता मत मानिये।

(अंक ३४८ के 'संन्यास माने क्या ?' से आगे)

मैं कर्मेन्द्रिय से युक्त होकर के कर्ता हूँ – पापी और पुण्यात्मा हूँ। मैं ज्ञानेन्द्रिय से युक्त होकर के भिन्न-भिन्न विषयों का – घट-पटादि और शब्द-स्पर्शादि विषयों का – ज्ञाता हूँ। ये कर्तापना और ज्ञातापना भी आभास-भास्य नहीं हैं। ये भी साक्षी-भास्य हैं। किसीको कर्तापना – पापीपना, पुण्यात्मा-पना दिखाई थोड़े ही पड़ता है, किसीको ज्ञातापना दिखाई थोड़े ही पड़ता है, वह तो मान बैठता है। संन्यास का अर्थ यह है कि आप अपने को दुःखी और सुखी मत मानिये। आप अपने को कर्ता और ज्ञाता मत मानिये। आप तो ज्ञानस्वरूप हैं। आप मन की उपाधि से अपने को भोक्ता क्यों मानते हैं ? आप कर्मेन्द्रिय की उपाधि से अपने को कर्ता क्यों मानते हैं ? आप ज्ञानेन्द्रिय की उपाधि से अपने को ज्ञाता क्यों मानते हैं ? आप अपने को भोक्ता, कर्ता, ज्ञाता मत मानिये।

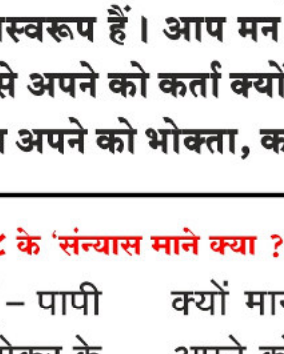

- स्वामी अखंडानंदजी

आप हो – सन्मात्र (सत्+मात्र)। आप सत्स्वरूप हो। असल में, न आपका जन्म होता है और न आपकी मृत्यु होती है। भला बताओ ! क्या आप अपने जन्म और मरण को देखते हैं ? क्या आज तक दुनिया में कोई ऐसा अनुभवी पुरुष हुआ है जिसने अपने को जन्मता और मरता हुआ देखा हो ? अरे भाई ! जो देख रहा है वह जन्म और मरण का साक्षी है। जो देखता है वह जन्मता और मरता नहीं है। जो जन्मता और मरता हुआ दिखता है वह कोई अन्य है। वह तो कोई अन्य

औषधीय गुणों से युक्त सर्वसुलभ वनस्पति :

भुई आँवला

यकृत की उत्तम औषधि | पाचनशक्ति बढ़ानेवाला | रक्त-शुद्धिकर व रक्तपित्तशामक

भुई आँवला यकृत (liver) की बहुत ही उत्तम औषधि है। यह यकृत की कार्यप्रणाली को सक्रिय कर पाचन में सुधार करता है। यकृत की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को स्वस्थ करने तथा नयी कोशिकाओं के निर्माण में मदद करता है।

सम्पूर्ण भारत में, विशेषतः उष्ण प्रदेशों में सहजता से पाया जानेवाला भुई आँवला बहुत ही गुणकारी औषधि वनस्पति है। इसे संस्कृत में भूम्यामलकी, मराठी में भुई आँवली, गुजराती में भोंय आँवली कहते हैं। इसका पंचांग (जड़सहित सम्पूर्ण पौधा) औषधि के रूप में काम आता है। यह शीतल, कफ-पित्तशामक, भूख व पाचनशक्ति बढ़ानेवाला है। साथ ही यह बल्य होने से सामान्य दुर्बलता व कमजोरी को दूर करता है।

भुई आँवला यकृत (liver) की बहुत ही उत्तम औषधि है। यह यकृत की कार्यप्रणाली को सक्रिय कर पाचन में सुधार करता है। यकृत की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को स्वस्थ करने तथा नयी कोशिकाओं के निर्माण में मदद करता है।

अंग्रेजी दवाइयों के दीर्घकालीन सेवन से अथवा प्रदूषित अन्न या किसी भी कारण से शरीर में संचित हानिकारक विषैले पदार्थों (toxins) को शरीर से बाहर निकालने में यह सहायता करता है। इसमें रक्त-शुद्धिकर व रक्तपित्तशामक गुण होने से इसके सेवन से शुद्ध रक्त के निर्माण में विशेष सहायता मिलती है। पीलिया, हेपेटाइटिस बी,

जिन्होंने विष पिया, अमृत बाँटा

(पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

जल मरनेवाले संशयवाले होते हैं, श्रद्धारहित होते हैं, ऐसे लोग नरकों में जाते हैं, नीच योनियों में भटकते हैं और संत का सद्गुण देखकर फायदा लेनेवाले श्रद्धालु और बुद्धिमान होते हैं, भगवान के परम सुख, शांति, ज्ञान के भागीदार होते हैं, उनकी चौरासी की भटकान मिट जाती है।

जब-जब इस धरती पर लोक-कल्याण के लिए संतों-महापुरुषों का अवतरण हुआ है तब-तब ईर्ष्यालु तत्त्वों ने उन्हें परेशान करने का प्रयत्न किया है। निंदकों ने तो जो नहीं करना चाहिए वह भी कर डाला। आद्य शंकराचार्यजी के लिए कितनी-कितनी अफवाहें फैलायीं, क्या-क्या किया ! शंकराचार्यजी ने अपनी माँ को वचन दिया था कि 'माँ ! मैं तुम्हारी अंत्येष्टि करने को आऊँगा।' 'माँ का अंतिम समय है' त्रिकालज्ञानी योगी को यह पता चल गया और वे माँ के पास पहुँचे।

माँ का शरीर छूटा, उन्हें श्मशान ले जाना था पर दुष्टों ने ऐसा माहौल बनाया कि कोई भी उनकी मदद के लिए नहीं आया। अकेले शंकराचार्य माँ के शव को श्मशान में ले जाने में असमर्थ हो गये। चार आदमी तो चाहिए, चार नहीं तो कम-से-कम दो तो हों कि टाँगाटोली* करके भी तो ले जायें। कोई भी साथ नहीं दे रहा था। उस महापुरुष को अपनी माँ के शव के तीन-चार टुकड़े करने पड़े। फिर एक-एक टुकड़ा लेकर गये और माँ का अंतिम संस्कार किया। इतने जुल्म इस धरती पर आनेवाले महापुरुषों के साथ दुष्टों ने किये और करवाये, फिर भी महापुरुष समाज में आध्यात्मिक ज्ञान-प्रसाद बाँटते ही चले आते हैं।

ज्ञानेश्वर महाराज की बहन मुक्ताबाई को

जीवन-उद्धारक सत्साहित्य

इसमें आप पायेंगे : ✲ बाल-युवा पीढ़ी को संयमी व सफल बनानेवालीं कुंजियाँ ✲ मृतक को सद्गति व उसके स्वजनों को शांति व सांत्वना प्रदायक अमृत-वचन ✲ जीते-जी मृत्यु का बोध कराकर विवेक-वैराग्य जगाने तथा अमर आत्मस्वरूप की अनुभूति तक ले जानेवाला सत्संग ✲ लोकोद्धारक संत पूज्य बापूजी की पद्यमय प्रेरक जीवन-गाथा

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य !
पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

गौ घृत कपूर धूप गोली

पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में उपयोगी

गौ-घृत और शुद्ध कपूर से बनी यह गोली नित्य जलाने से वातावरण सात्त्विक होता है, घर में शांति व पवित्रता आती है, रोगाणु नष्ट होते हैं और नकारात्मकता दूर होती है। शरीर पर बीमारियों का आक्रमण जल्दी से नहीं होता है।

रजत मालती

शुद्ध रजत भस्म (चाँदी-भस्म) युक्त

✲ आयु, बुद्धि, नेत्रज्योति, वीर्य, कांति व रक्त वर्धक ✲ मस्तिष्क व वातवहनाड़ियों हेतु बल्य ✲ रक्ताल्पता, पैरालिसिस, हिस्टीरिया, बुढ़ापे के रोग, नपुंसकता आदि में विशेष लाभदायी

सुरक्षा वटी

संक्रामक रोगों से सुरक्षा व राहत हेतु

यह वटी रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ाकर सर्दी, जुकाम, बुखार आदि संक्रामक रोगों से सुरक्षा करती है। पाचनशक्ति बढ़ाकर साररूप सप्तधातुओं के निर्माण में मदद करती है। संक्रामक रोग होने पर इसके सेवन से शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होता है।

गिलोय चूर्ण

दीर्घायुप्रदायक श्रेष्ठ रसायन

गिलोय बल-बुद्धिवर्धक, सप्तधातुओं को बढ़ानेवाली, साथ ही कई रोगों का नाश करनेवाली रसायन औषधि है। यह जठराग्नि को बढ़ाकर शरीर में से आमदोष (कच्चे रस) को दूर करती है जिससे अनेक रोगों से सुरक्षा तो होती ही है, साथ ही रोगों का नाश भी होता है। यह रोगप्रतिकारक शक्ति को बढ़ाकर अनेक संक्रामक रोगों से रक्षा करती है।

मैग्नेटिक माला, पायल व ब्रेसलेट

विभिन्न तकलीफों में लाभदायी

गर्दन के दर्द, सर्वाइकल (cervical spondylosis), टॉन्सिल व थायरॉइड की तकलीफ, सायटिका, पिंडलियों तथा एड़ियों के दर्द, पैरों की सुन्नता, कंधे, हाथों और कलाई के दर्द में आश्चर्यजनक रूप से लाभकारी

गुलाब महक (गुलाबजल)

गर्मी-संबंधी तकलीफों में उपयोगी

✲ शीतलताप्रदायक, प्राकृतिक सौंदर्यप्रद व त्वचा के रंग को निखारनेवाला ✲ मुँहासों, त्वचा के लाल चकत्तों, आँखों के नीचे के काले घेरों तथा गर्मी के कारण होनेवाली फुंसियों को दूर करने में सहायक

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

गुरुपूर्णिमा पर आश्रमों में उमड़ा जनसैलाब, श्रद्धा-भक्ति दिखी अपार

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी